International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 154-155

वैश्वीकरण और उच्च शिक्षा; समस्याएँ एवं नूतन संभावनाएँ

डॉ0 नीतू शर्मा
रीडर–हिन्दी विभाग, आई0टी0 कालेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

वैश्वीकरण में सम्पूर्ण विश्व को एक समान माना गया है और सभी देशों की समस्याओं का उपयुक्त समाधान एवं उपयुक्त क्रमिक उन्नयन को महत्व दिया गया है। इस वैश्विक प्रक्रिया में सम्प्रत्यय में विश्व को एक दृष्टि से देखने व परस्पर सक्रिय सहयोग देकर सबका हित करना सम्मिलित है। इस प्रक्रिया के माध्यम से संस्कृति और उद्योग धन्धों का विस्तार, मिशनरी गतिविधियाँ, तकनीकी परिवर्तन आदि कई देशों में फैल जाते हैं इस रूप में विश्वव्यापीकरण या भूमण्डलीकरण का सामान्य अर्थ है अन्तनिर्भरता (Interdependence)। आधुनिक युग में इसका आशय मात्र आर्थिक क्षेत्र के विकास से जुड़कर परिलक्षित हैं, परन्तु गुजरते समय के साथ–साथ इस आशय में परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ और इसने रोजगार चिकित्सा, अभियान्त्रिकी, व्यापार व उद्योग एवं शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नयी सम्भावनाओं को खोजा है।

अब चूँकि वैश्वीकरण एक सत्य है। सम्पूर्ण पृथ्वी एक 'ग्लोबल ग्राम' (Global Village) बनने की ओर अग्रसर है। तीव्र संचार और यातायात की बढ़ती सुविधाएं पारम्परिक जीवन को परिवर्तित कर रही है। इस परिप्रेक्ष्य में 'उच्च शिक्षा' को न केवल बढ़ाना आवश्यक है, अपितु आवश्यकतानुसार कौशल–परक, रोजगार–परक तथा परिणाम–परक बनाना समय की आवश्यकता बन गयी है। यह सत्य न केवल हमारे देश भारत अपितु विश्व के सभी राष्ट्रों के लिए लागू होता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया आर्थिक जगत से सम्बद्ध होने के साथ ही साथ समाज के अन्य क्षेत्रों से भी सम्बन्धित है। आज अन्तर्राष्ट्रीय जगत में यह धारणा बनी हुई है कि कुछ राष्ट्र अपनी अर्थव्यवस्था और संस्कृति विकासशील राष्ट्रों पर थोपना चाहते हैं, इन राष्ट्रों के लिए वैश्वीरकण एक उपयुक्त प्रक्रिया है। वैश्वीकरण के प्रमुख प्रेरक निम्नवत हैं–

1. बाजार की खोज
2. बहुराष्ट्रीय विनिवेश
3. प्रौद्योगिक, इलेक्ट्रॉनिक्स के नये उपकरण (इण्टरनेट)

वैश्वीकरण की वर्तमान तीव्र गति के कारण विश्व के विभिन्न समाजों तथा राष्ट्रों के जीवन यापन के ढंग से दृश्यमान परिवर्तन हो रहा है। इस प्रक्रिया में निजीकरण को बढ़ावा दिया है, जिसने कारपोरेट संस्कृति को जन्म दिया है। वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में पड़ा है। विशेषकर तकनीकी शिक्षा में आज किसी भी देश में शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा में जो सुधार हो रहे हैं, वह बहुत कम समय में अधिकांश देशों तक पहुँचाये जा रहे हैं। कम्प्यूटर ज्ञान की लोकप्रियता बढ़ रही है।

वैश्वीकरण उपभोक्ता मूलक अर्थ व्यवस्था द्वारा अग्रसर है, जबकि सम्पूर्ण विश्व का 80 प्रतिशत भाग उत्पादन मूलक अर्थव्यवस्था में संलग्न है। विकासशील देशों तथा भारत में रह रहे निर्धन, कमजोर वर्ग, पिछड़े वर्ग, कृषि श्रमिक आदि की आवश्यकताओं और आशाओं के लिए यह भ्रामक है, क्योंकि यह धनी, निर्धन के बीच उग्र चेतना और सामाजिक–आर्थिक दूरी को बढ़ावा देता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने सम्पूर्ण विश्व के आर्थिक विकास की कायापलट ही कर दी है। फलस्वरूप प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि हुई है। उच्च शिक्षा में आर्थिक विकास की उच्च दर प्राप्त करने हेतु

विभिन्न विकल्पों को भी तलाशा जा रहा है। जिसमें उन्नत व तकनीकी प्रबन्ध कुशलता, मानव व प्राकृतिक संसाधनों का पूरा उपयोग, उद्योगों को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में स्पर्धात्मक बनाने, कृषि एवं औषधि जैसे विषयों पर शिक्षा प्रदान की जाने लगी है–

''भारत शोध और विकास के मुख्य केन्द्र के रूप में उभर रहा है, लेकिन क्या यह सिलीकॉन वैली से आगे निकल पाएगा? जब अमेरिकी भारत के टैक्नोलॉजी सेक्टर के बारे में सोचते हैं, उनके दिमाग में भारत की छवि एक ऐसे देश के रूप में उभरी है जहाँ कॉल सेंटर कर्मचारी और निचले दरजे के कम्प्यूटर प्रोग्रामर हैं जो डाटाबेस की देखभाल और बेबसाइट अपडेट करने जैसे काम करते हैं।'' – विवेक वाधवा

इस रूप में वैश्वीकरण विकासशील देशों के निवासियों के लिए कम कीमतों, अधिक रोजगार और उच्च उत्पाद एवं उच्च जीवन स्तर को बढ़ावा देता है।

वैश्वीकरण विभिन्नता का समावेश कर लेती है। यह प्रक्रिया जिस संस्कृति को विश्व भर में समान रूप देती है, वह एक जैसी जीवन पद्धति है। उपभोग करना ऐतिहासिक तथ्य बन जाता है और यह एक सार्वभौमिक आदत बन जाती है। वैश्वीकरण ने विश्वभर में उपभोग करने की बनावटी आवश्यकता को पैदा किया है। इसलिए आज जिस समाज का उद्भव हो रहा है, वह उपभोग समाज है। इसके फलस्वरूप समाज में एक लोकप्रिय संस्कृति (Popular Culture) पनप रही है। यह संस्कृति जन संस्कृति (Folk Culture) के रूप में लोगों में सजातीयता ला रही है। इस दृष्टि से 'पर्यटन' व्यापार एवं व्यवसाय का अंग बन गया है।

वैश्वीकरण ने जाति प्रथा के कठोर बंधन को ढीला किया है। औद्योगीकरण एवं नगरीयकरण के फलस्वरूप सभी जातियों के लोग मिलकर काम कर रहे हैं। खान–पान, रहन–सहन तथा जातिगत दूरियों में पर्याप्त परिवर्तन हुए हैं। वर्गों के मध्य विभिन्न उपवर्गों का जन्म हुआ है। वैश्वीकरण प्रक्रिया ने विश्व पूंजीवाद को बढ़ावा दिया है। सांस्कृतिक बाजार में वस्तुओं को पहुँचाने का कार्य पूँजीवाद करता है, वैश्वीकरण ने स्थानीय सांस्कृतिक पदार्थों को विश्व भर में पहुँचाया है। इसने समय और स्थान को घटाकर छोटा कर दिया है। विभिन्न देशों के मध्य दूरियाँ कम हो गयीं, इसका प्रभाव उच्च शिक्षा में पाठ्यक्रमों पर भी पड़ा, आज न्यूट्रीशन, डाइटट्रिक्स, गृह विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरिंग जैसे विषयों में विशेष रूझान और पर्याप्त संभावनाएं तलाशी जा रहीं हैं।

वैश्वीकरण को कैसे आंका जाए? इस विषय पर 'डॉ0 अमर्त्यसेन' का कहना है कि – वैश्वीकरण को प्रायः वैश्विक पश्चिमीकरण के रूप में देखा जाता रहा है इस विषय पर कई समर्थकों एवं

विरोधियों के बीच बहुत अधिक सहमति है। वैश्वीकरण को अच्छी दृष्टि से देखने वाले इसे विश्व के लिए पश्चिमी सभ्यता का अद्भुत योगदान मानते हैं। यूरोप में महत्वपूर्ण विकास का एक रोचक इतिहास है जिसमें मानव कल्याण का आधार विज्ञान और तर्क को माना गया इसके वाद यहाँ औद्योगिक क्रान्ति हुई। इस सब के परिणामस्वरूप पश्चिम की महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि इसका विस्तार पूरे विश्व में हो रहा है।

समग्र रूप में वैश्वीकरण का लाभ प्राप्त करने के लिए वित्तीय संयोजन एवं वित्तीय अनुशासन जैसे अन्य प्रबन्धन कोर्सों की उपयोगिता सामने आयी है जो शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसे बुनियादी क्षेत्रों में व्याप्त आर्थिक तंगी को भी दूर करने का उपयुक्त संसाधन सिद्ध हो सकते हैं और यह तभी सम्भव है जब हम विदेशी और स्वदेशी दृष्टिकोण के मध्य सकारात्मक तालमेल बिठाने में सफल हो सकें।

सन्दर्भ

1. परिवर्तन एवं विकास का समाज शास्त्र – डॉ0 जी0आर0 मदन, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, नई दिल्ली।
2. चार देशों की शिक्षा प्रणालियाँ – डॉ0 सीताराम जायसवाल, प्रकाशन केन्द्र, सीतापुर रोड, लखनऊ।
3. भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएं – रामबाबू गुप्त, रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा।
4. समाजशास्त्र – नई दिशाएं – एस0एल0 दोषी, पी0सी0 जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. भारतीय समाज एवं संस्कृति, डॉ0 आर0एन0 मुखर्जी, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. वैश्वीकरण एवं उच्च शिक्षा की सम्भावनाएं – रघुराज सिंह, श्री पब्लिशिंग हाउस।